## खंड 'क'
## (अपठित बोध)

1. (i) (a) (I) और (II) दोनों (शारीरिक थकान और आत्मा की थकान)
   (ii) (c) हर दिन दूसरों की उपलब्धियों को दिखा ललचाता रहता है।
   (iii) (b) कथन सही है किंतु कारण गलत है।
   क्योंकि गद्यांश के अनुसार दूसरों की नक़ल से सच्ची खुशी नहीं मिलती,बल्कि अपनी पहचान और आत्म-साक्षात्कार से मिलती है।
   (iv) हमें बचपन में होशियार बनने, अच्छे अंक लाने और जीतने की सीख दी जाती है। धीरे-धीरे यह सीख दूसरों से आगे निकलने की आदत और प्रतिस्पर्धा में बदल जाती है, जिससे हम तुलना करने लगते हैं और अपनी वास्तविक पहचान से दूर हो जाते हैं।
   (v) खुशी और संतोष आत्म- साक्षात्कार तथा स्वयं को समझने से प्राप्त होते हैं, न कि दूसरों से तुलना करने से। उन्हें पाने के लिए मैं अपनी क्षमताओं को पहचानूँगा, स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयास करूँगा और दूसरों से तुलना करने के बजाय अपने लक्ष्यों पर ध्यान दूँगा।
2. (i) (d) जीवन से प्रकृति और उसका साहचर्य गायब होना।
   (ii) (c) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की उचित व्याख्या है।
   (iii) (d) (I) और (II) सही हैं। (बाज़ारीकरण का बढ़ता प्रभाव तथा प्रकृति की उपेक्षा)
   (iv) ' नन्हीं पीढ़ी' से आशय नई या भावी पीढ़ी के बच्चों से है। कवयित्री उसे साथ इसलिए लेकर गई ताकि वह उसे प्रकृति के विनाश, सूखती नदियों और बदलते पर्यावरण की वास्तविक स्थिति से परिचित करा सके तथा प्रकृति के महत्व को समझा सके।
   (v) (1)पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाए तथा वनों की कटाई रोकी जाए।
   (2)नदियों, जलस्रोतों और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जाए तथा प्रदूषण को नियंत्रित किया जाए।

## खंड 'ख'
## (व्यावहारिक व्याकरण

3. (i) भेद: मिश्र वाक्य
   (ii) मिश्र वाक्य: पानवाले के मुँह में पान ठूँसा हुआ था जो उसके खुद के मुँह में था।
   (iii) पान वालों के लिए यह मज़ेदार तथा हवलदार साहब के लिए चौंकाने वाली बात थी।
   (iv) संयुक्त वाक्यः आषाढ़ की रिमझिम हुई और समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा।
   (v) कालवाचक आश्रित उपवाक्य — जब उत्साह कविता लिखी गई।
   भेद: क्रियाविशेषण उपवाक्य (कालवाचक) ।
4. (i) सभी बच्चों द्वारा पाठ पढ़ा गया। (कर्मवाच्य)
   (ii) "नागार्जुन ने बच्चे की मुस्कान पर कविता लिखी।" –(कर्तृवाच्य)
   (iii) वृद्धा चल नहीं रहा था। (कर्तृवाच्य)
   (iv) तुमसे जाना नहीं जा सकता। (भाववाच्य)
   (v) "आपके द्वारा अपनी सफलता का उल्लेख नहीं किया गया।" —(कर्मवाच्य)
5. (i) अपने - सार्वनामिक विशेषण
   (ii) उधर - स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
   (iii) आँखों-ही-आँखों में - रीतिवाचक क्रिया-विशेषण
   (iv) आए दिन - कालवाचक क्रिया-विशेषण
   (v) हे - विस्मयादिबोधक अव्यय (संबोधनसूचक)
6. (i) पद को पंकज/कमल कहा गया है
   (ii) मानवीकरण अलंकार।
   (iii) अतिशयोक्ति अलंकार।
   (iv) "मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।"
   (v) " मुख मानो चन्द्रमा हो।"

## खंड 'ग'

## (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक

7. (i) (c) कथन (II) और (IV) सही हैं। (शिष्या खाँ साहब की प्रतिष्ठा के लिए चिंतित थी तथा उनके प्रति आत्मीयता का भाव रखती थी।)
(ii) (b) स्नेह का ('धत्र पगली संबोधन में स्नेह और अपनापन झलकता है।)
(iii) (a) कथन सही है परंतु कारण गलत है। (खाँ साहब सचे सुरों की प्रार्थना करते थे, लेकिन इसका कारण भारतरत्न मिलने के बाद अधिक विनम्र होना नहीं था।)
(iv) (a) (I), (II) और (III) तीनों (खाँ साहब परिश्रमी, प्रतिभावान और सरल स्वभाव के थे।)
(v) (a) ईश्वर उनके वादन में सुरीलापन सदैव बनाए रखे। ('फटा सुर न बख्शें ' का आशय है कि उनके शहनाई-वादन में कभी बेसुरापन न आए।)
8. (i) 'नेताजी का चश्मा' पाठ में मूर्ति पर पत्थर का चश्मा न होना बड़ी बात नहीं थी, क्योंकि वह केवल सजावट का हिस्सा था। बड़ी बात यह थी कि कोई व्यक्ति नेताजी के प्रति सम्मान और देशभक्ति की भावना से असली चश्मा लगाता था।
(ii) बालगोबिन भगत का बेटा सामान्य बच्चों से अलग, शांत, आज्ञाकारी और सरल स्वभाव का था। भगत उसे अत्यंत सेह देते थे, उसकी देखभाल करते थे तथा उसे अच्छे संस्कार और आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करते थे।
(iii) नवाब साहब खीरे के साथ देखे जाने पर असहज हो गए थे, क्योंकि उन्होंने खीरा खरीदने के बाद उसे खाने के बजाय केवल उसकी प्रशंसा की और दिखावे के लिए उसके टुकड़े खिड़की से बाहर फेंक दिए। इससे उनकी झिझक और दिखावटी प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।
(iv) माहू भंडारी ने अपने व्यक्तित्व पर पिता के प्रभाव को स्वीकार किया है। उनके व्यक्तित्व में आत्मसम्मान, स्वतंत्र विचारधारा तथा अन्याय के प्रति विरोध की भावना उनके पिता से प्राप्त गुणों को दर्शाती है।
9. (i) (b) उद्धव का मन प्रेम से अछूता रहा।
(ii) (a) केवल (III) सही है। (गोपियाँ अपनी तुलना गुड़ से चिपटी चींटियों से करती हैं।)
(iii) (d) (I) और (IV) सही हैं।
(iv) (c) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की उचित व्याख्या है।
(v) (a) प्रेम-भाव से भरी नदी के समान।
10. (i) परशुराम के आगमन के बाद राजा जनक की सभा में भय और तनाव का वातावरण छा गया। सभी राजा मौन हो गए। लक्ष्मण और परशुराम के बीच तीखा संवाद हुआ, जबकि राम शांत और विनम्र बने रहे।
(ii) संगीतकार का कर्त्तव्य मुख गायक को सहयोग देना है। वह स्वयं पीछे रहकर भी प्रस्तुति को सफल बनाता है। यही निस्वार्थ सहयोग, समर्पण और दूसरों को आगे बढ़ाने की भावना उसकी मनुष्यता को प्रकट करती है।
(iii) 'यह दंतुरित मुस्कान' कविता में बाँस या बबूल की संज्ञा कवि ने स्वयं को दी है। वह लंबे समय तक पुत्री से दूर रहने के कारण अपने जीवन को सूखा, कठोर और नीरस मानता है।
(iv) 'उत्साह' कविता का केंद्रीय भाव नवचेतना, क्रांति और जन-जागरण है। बादल शक्ति, ऊर्जा और परिवर्तन के प्रतीक हैं, इसलिए कवि ने उनके माध्यम से समाज में उत्साह और नई चेतना का संदेश दिया है।
11. (i) 'माता का अँचल'
भोलानाथ के पिता बच्चों के पालन-पोषण में अत्यंत कुशल थे। वे भोलानाथ को स्वयं नहलाते-धुलाते, खिलाते और उसके साथ खेलते थे। जब भोलानाथ डर जाता था या बीमार पड़ता था, तब पिता उसका पूरा ध्यान रखते थे। इन प्रसंगों से स्पष्ट है कि प्रयास और स्नेह के बल पर पुरुष भी बच्चों का पालन-पोषण उतनी ही भली-भाँति कर सकते हैं जितना महिलाएँ।
(ii) 'साना-साना हाथ जोड़ि'
लेखिका को 'लायुंग' इसलिए अधिक पसंद आया क्योंकि वहाँ प्राकृतिक सौंदर्य, शांति, स्वच्छ वातावरण और स्थानीय लोगों का अपनापन था। वह स्थान भीड़-भाड़ से दूर होकर प्रकृति के निकट था। मेरे विचार से किसी पर्यटन स्थल को प्रसिद्ध और दर्शनीय बनाने वाले प्रमुख बिंदु प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक या सांस्कृतिक महत्व,स्वच्छता, सुरक्षा, यातायात की सुविधा तथा पर्यटकों के लिए उपलब्ध आवश्यक सुविधाएँ होती हैं।
(iii) मैं क्यों लिखता हूँ"
मैं इस विचार से सहमत हूँ कि एक लेखक के प्रेरणास्रोत दूसरे लेखक को भी प्रेरित कर सकते हैं, परंतु उनकी अभिव्यक्ति भिन्न होती है। समाज, प्रकृति, जीवन-संघर्ष और मानवीय अनुभव अनेक लेखकों के लिए समान प्रेरणा के स्रोत बन सकते हैं। 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में लेखक ने आंतरिक विवशता तथा गहन अनुभूतियों को अपने लेखन का आधार बताया है। यद्यपि प्रेरणा का

स्रोत समान हो सकता है, फिर भी प्रत्येक लेखक अपनी दृष्टि, संवेदनाओं और अनुभवों के अनुसार उसे अलग रूप में प्रस्तुत करता है।

## खंड 'घ'

## (रचनात्मक लेखन)

12. (i) यात्राएँ हमें बेहतर मनुष्य बनाती हैं

यात्राएँ मनुष्य के जीवन को समृद्ध और अनुभवपूर्ण बनाती हैं। विभिन्न स्थानों की यात्रा करने से हमें वहाँ की संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज तथा भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त होती है। हम अलग-अलग परिवेश और लोगों की मान्यताओं को समझते हैं, जिससे हमारे विचारों में व्यापकता आती है। यात्राएँ हमें सहनशीलता, सहयोग और अनुकूलन की भावना सिखाती हैं। नए लोगों से मिलकर हमारे ज्ञान और अनुभव में वृद्धि होती है। पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान के साथ-साथ प्रत्यक्ष अनुभव भी जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार यात्राएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि वे हमें अधिक संवेदनशील, समझदार और बेहतर मनुष्य बनने में सहायता करती हैं।

(ii) उत्तम स्वास्थ्य : सबसे बड़ा धन

उत्तम स्वास्थ्य मनुष्य का सबसे बड़ा धन है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन और श्रेष्ठ विचारों का विकास होता है। यदि व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो, तो वह अपने सभी कार्य उत्साह और दक्षता से कर सकता है। स्वास्थ्य अच्छा होने पर जीवन सुखमय और आनंदपूर्ण बन जाता है। स्वास्थ्य की रक्षा के लिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद तथा स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। साथ ही तनाव से दूर रहकर सकारात्मक सोच अपनानी चाहिए। धन-संपत्ति का महत्व तभी है जब व्यक्ति स्वस्थ हो। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना चाहिए और इसे जीवन की सबसे मूल्यवान संपत्ति मानना चाहिए।

(iii) जब मैंने बैंक में बचत खाता खुलवाया

कुछ समय पहले मैंने बैंक में अपना बचत खाता खुलवाया। सबसे पहले मैंने खाता खोलने की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की। इसके बाद आवश्यक दस्तावेज़, जैसे आधार कार्ड, पैन कार्ड और पासपोर्ट आकार का फोटो लेकर बैंक पहुँचा। वहाँ बैंक कर्मचारी ने मुझे आवेदन-पत्र दिया, जिसे मैंने सावधानीपूर्वक भरकर जमा कर दिया। दस्तावेज़ों का सत्यापन होने के बाद मेरा बचत खाता खोल दिया गया। बैंक से मुझे पासबुक और अन्य आवश्यक जानकारी भी प्राप्त हुई। अपना खाता खुलने की सूचना पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। अब मैं अपनी बचत सुरक्षित रख सकता हूँ तथा बैंकेंग सुविधाओं का लाभ भी आसानी से उठा सकता हूँ।

13. (i) संपादक को पत्र

सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक समाचार-पत्र,
जयपुर।
विषय: मुहल्ले में 'कचरा पृथक्करण' अभियान की सफलता के संबंध में।
महोदय,
मैं कवीश हूँ। हमारे मुहल्ले में हाल ही में 'कचरा पृथक्करण' अभियान चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत लोगों को गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग रखने के लिए जागरूक किया गया। घर-घर जाकर पर्चे बाँटे गए तथा स्वच्छता संबंधी जानकारी दी गई। सभी निवासियों के सहयोग से अभियान सफल रहा। अब अधिकांश घरों में कचरा पृथक्करण नियमित रूप से किया जा रहा हे, जिससे स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण में सहायता मिली है। कृपया इस समाचार को अपने प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में प्रकाशित करने का कष्ट करें।
धन्यवाद।
भवदीय,
कवीश

### अथवा

(ii) प्रिय मित्र को पत्र

21, शांति नगर
उदयपुर
दिनांक: 19 जून 2026
प्रिय मित्र राहुल,
सप्रेम नमस्कार।

पिछले सप्ताह मेरे माता-पिता को अचानक दूसरे शहर जाना पड़ा। उनके अनुपस्थित रहने पर घर की सारी जिम्मेदारी मुझे संभालनी पड़ी। मैंने समय पर भोजन की व्यवस्था की, घर की साफ-सफाई की तथा आवश्यक सामान भी लाया। साथ ही अपनी पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान दिया। इस अनुभव ने मुझे आत्मनिर्भर, जिम्मेदार और अनुशासित बनना सिखाया। अब मुझे घर के कार्यों का महत्व और माता-पिता के परिश्रम का भी बेहतर अनुभव हुआ है।
शेष कुशल है । उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।
तुम्हारा प्रिय मित्र,
कवीश।

14. (i) नगर निगम अध्यक्ष को ई मेल

प्रेषक: aman@gmail.com
प्राप्तकर्ता: commissioner@nagar-nigam.in
विषय: वर्षा के कारण उत्पन्न समस्याओं के समाधान हेतु निवेदन
महोदय,
मैं जयपुर का निवासी अमन हूँ। शहर में लगातार हो रही वर्षा के कारण अनेक स्थानों पर जलभराव, क्षतिग्रस्त सड़कें तथा जाम की समस्या उत्पन्न हो गई है। नालियों की नियमित सफाई न होने से गंदा पानी सड़कों पर फैल रहा है, जिससे दुर्धटनाओं और बीमारियों का खतरा बढ़ गया है।
अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि जल निकासी की उचित व्यवस्था करवाई जाए, नालियों की सफाई करवाई जाए तथा क्षतिग्रस्त सड़कों की शीघ्र मरम्मत करवाई जाए, ताकि नागरिकों को राहत मिल सके।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमन
जयपुर

**अथवा**

(ii) इंटर्नशिप हेतु स्ववृत्त (Resume)
नाम: फरहान
पता: जयपुर, राजस्थान
मोबाइल: 98xxxxxxxx
ई-मेल: farhan@email.com
उद्देश्य: प्रमुख प्रकाशन संस्थान में इंटर्नशिप प्राप्त कर संपादन एवं लेखन कौशल का विकास करना।
शैक्षिक योग्यता:
•एम.ए. (अंग्रेजी) — अध्ययनरत, प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय
•बी.ए. (अंग्रेजी) — प्रथम श्रेणी
कौशल:
•लेखन एवं संपादन
•संप्रेषण कौशत
•कंप्यूटर एवं एम.एस. ऑफिस का ज्ञान
अनुभव:
कॉलेज पत्रिका के संपादन कार्य में सक्रिय सहभागिता।
घोषणा:
उपरोक्त जानकारी मेरे ज्ञानानुसार सत्य है।
फरहान

15. (i) एकम डेयरी प्रोडक्ट्स

शुद्धता और स्वाद का भरोसा!
ताज़ा दूध, दही, पनीर, घी एवं अन्य डेयरी उत्पाद उचित मूल्य पर उपलब्ध।
स्वास्थ्य और गुणकत्ता का अनूठा संगम।
एकम - हर घर की पहली पसंद।

**अथवा**

(ii) बधाई संदेश

प्रिय दीदी,
आपके द्वारा रचित गीत 'भेरे देश की मिट्टी' की लोकप्रियता पर हार्दिक बधाई। आपकी प्रतिभा, परिश्रम और देशप्रेम ने सभी का मन जीत लिया है। आपके उज्जल भविष्य एवं निरंतर सफलता की शुभकामनाएँ।